Roll No. : ....

Total No. of Questions : **12**]	[Total No. of Printed Pages : **4**

A–246

B.A. (Part–II) (NC) Examination, 2023

HINDI LITERATURE

Paper - I

(रीतिकालीन काव्य)

Time : 3 Hours]	[*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **50** शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए :

   (i) 'दृग-उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीत' के माध्यम से कवि प्रेम-व्यवहार की किस विलक्षणता की बात कर रहे हैं ?

(ii) 'देव' कवि एवं आचार्य दोनों थे। उनके आचार्य पक्ष की पहचान करवाइए।

(iii) 'मोहि तो मेरे कवित्त बनावत' यह पंक्ति किस कवि की है और यह कहने के पीछे कवि का अभिप्राय क्या है ?

(iv) ''वेद राखे विदित पुरान राखे सार युत, राम नाम राख्यो अति रसना सुघर में'' पंक्ति किसने, किसके लिए एवं किस आधार पर कही ? युक्तियुक्त समझाइए।

(v) व्यवहार के आधार पर 'नायक' के चार भेद माने गए हैं। चारों के नाम एवं लक्षण बतलाइए।

(vi) काव्य रस की दृष्टि से 'विभाव' किसे कहते हैं ? इसकी परिभाषा एवं भेदों की सम्यक जानकारी दीजिए।

(vii) रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों को संक्षेप में समझाइए।

(viii) पदमाकर के ऋतुवर्णन की संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

(ix) ''गिरधर की कुंडलियों का अन्योक्तिपरक पक्ष बहुत मजबूत है।'' इस कथन के पक्ष में अपने तर्क दीजिए।

(x) रज्जब की 'गुरु' विषयक मान्यताओं पर सारगर्भित टिप्पणी लिखिए।

खण्ड–ब

नोट :– नीचे लिखे सात में से किन्हीं **पाँच** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। उत्तर सीमा **200** शब्द।

2. सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहे जहं एक घटी।
निघटी रुचि मीचु घटी हु घटी, जब जीव जतीन की छूंअि तटी॥
अघ ओघ की बेरि कटी विकटी निकटी प्रकटी गुरु ज्ञान गटी।
चहुं औरन नाचति मुक्ति नटी गुण धूर जटी बन पंच वटी॥

3. नेह न नैंनन को कछू, उपजी बड़ी बलाय।
नीर भरे नितप्रति रहे, तऊ न प्यास बुझाय॥
आवत जात न जानियत, तेजहिं तजि सियरान।
घरह जंवाई लो घट्यो, खरो पूस दिनमान॥

4. जब तें कुंवर कान्ह रावरी कला निधान
कान परी वाके कहूं सुजस कहानी सी।
तब हीं तें 'देव' देखी देवता सी हंसती सी,
खीझती सी रीझती सी रूसती रिसान सी।
छोही सी छली सी छीनि लीन्हीं सी छकी सी छीनि,
जकी सी तकी सी लागि थकी थहरानी सी।
बींधी सी बंधी सी विष बूड़ी सी विमोहित सी,
बैठी वह बकत विलोकत बिकानी सी॥

5. वहै मुसक्यानि, वहै मृदु बतरानि, वहै
लड़कीली बानि, आनि उर में अरति है।
वहै गति लेन, ओ बजावनि ललित बैन,
वहै हंसि देव हियरा तें न टरति है।
वहै चतुराई सों चिताई चाहिबे की छवि,
वहै छैलताई न छिनक बिसरति है।
आनन्द-निधान प्रान-प्रीतम सुजान जु की,
सुधि सब भांतिन सो बेसुधि करति है॥

6. साईं सब संसार में, मतलब को व्यवहार।
जब लग पैसा गांठ में, तब लग ताको यार।
तब लग ताको यार, यार संगहि संग डोलैं।
पैसा रहा न पास, यार मुख से नहिं बोलैं।
कह गिरधर कविराय, जगत यहि लेखा भाई।
करत बेगरजी प्रीत, यार बिरला कोई साईं॥

7. संतो मगन भया मन मेरा।
अह निशि सदा एक रस लागा, दिया दरीबै डेरा।
कुल मरजाद मैंड सब भागी, बैठा भाठी नेरा।
जाति पांति कछु समझै नाहीं, किसको करै परेरा।
रस की प्यास आस नहीं औरैं, इहिं मत किया बसेरा।
ल्याव ल्याव याही लव लागी, पीवै फूल घनेरा।
सो रस मांग्या मिलै न काहू, सिर साटै बहुतेरा।
जन रज्जब तन मन दे लीना, होय धणी रा चेरा॥

8. भोग में रोग वियोग संयोग में, योग में काय कलेस कमायो।
त्यों 'पदमाकर' वेद पुराण, पढ्यो पढिके बहु वाद बढ़ायो।
दौर्‍यो दुरास में दास भयो, पे कहूं विसराम को धाम न पायो।
काय गमायो सु ऐसे ही जीवन, हाय पै राम को नाम न भायो॥

खण्ड–स

9. ''केशव की संवाद योजना रीतिकालीन काव्य की अनमोल विधि है।'' इस कथन से आप कितने सहमत हैं और क्यों ? सोदाहरण समझाइए।

10. ''सेनापति के काव्य का भावपक्ष जितना गहरा एवं असरकारक है, कलापक्ष भी उतना ही उम्दा एवं उल्लेखनीय है।'' इस कथन के आलोक में सेनापति के काव्यसौंदर्य का विश्लेषण कीजिए।

11. कवि भूषण के काव्य में गुंफित राष्ट्रीय चेतना की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

12. ''रीतिकालीन काव्यधाराओं का परिचय एवं प्रवृत्तियाँ'' विषय पर एक आलोचनात्मक निबंध लिखिए।